पानी का दुरुपयोग बना सकता है कंगाल, ग्रंथों में भी लिखी हैं ये बातें

जिस घर में पानी का दुरुपयोग होता है वहां सदैव धन का अभाव रहता है और धन की देवी मां लक्ष्मी भी ऐसे घर में नहीं ठहरतीं।

धर्म ग्रंथों में भी पानी से संबंधित कई महत्वपूर्ण बातें बताई गई हैं। उसके अनुसार जिस घर में पानी का दुरुपयोग होता है वहां सदैव धन का अभाव रहता है और धन की देवी मां लक्ष्मी भी ऐसे घर में नहीं ठहरतीं। यही बात वास्तु शास्त्र में भी कही गई है। जानिए पानी का कैसा दुरुपयोग करने पर या उसे गंदा करने पर मां लक्ष्मी रुठ जाती हैं-

1 - वास्तु शास्त्र के अनुसार जिस घर के नलों में व्यर्थ पानी टपकता रहता है। उस घर में सदा धन का अभाव रहता है। नल से व्यर्थ टपकते पानी की आवाज उस घर के आभा मंडल को भी प्रभावित करती है। इसलिए इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि घर के नलों से पानी व्यर्थ नहीं टपके।

2- स्कंदपुराण के अनुसार-

मलं मूत्रं पुरीषं च श्लेश्म: निष्ठीनाश्रु च।
गण्डूषाश्चैव मुञ्चन्ति ये ते ब्रह्महणै: समा:।।

अर्थात जो मनुष्य नदी, तालाब या कुंओं के जल में मल-मूत्र, थूक, कुल्ला करते हैं या उसमें कचरा फेंकते हैं, उनको ब्रह्महत्या का पाप लगता है। साथ ही ऐसे लोग कभी संपन्न नहीं होते।

यूयं विवस्त्रा यदपो धृतव्रता व्यगाहतैत्तदु देवहेलनम्।
बद्ध्वाञ्जलिं मूध्न्र्यपनुत्तयेंहस: कृत्वा नमोधो वसनं प्रगृह्यताम्।।

श्रीकृष्ण ने अपनी परमप्रिय गोपियों से कहा कि तुमने निर्वस्त्र होकर यमुना नदी में स्नान किया

इससे जल के देवता वरुण और यमुनाजी दोनों का अपमान हुआ अत:दोनों हाथ जोड़कर उनसे क्षमा मांगों।

भगवान इस प्रसंग से हमें ये सीख देते हैं कि जहां पर भी संग्रहित जल हो उस स्थान के स्वामी वरुण देवता होते है। उसको गंदा करने से या दूषित करने से जल के देवता का अपमान होता है व ऐसे लोग सदैव धन के अभाव में जीते हैं।

Prev

आम आदमी कैसे बचायें जल ?

आम आदमी पानी कैसे बर्बाद करता है और बचाने में क्या सहयोग कर सकता है। जीवन रक्षक इस अमूल्य पेय जल को हम प्रतिदिन बड़ी निदर्यता व लापरवाही से प्रातः उठने से रात्रि सोने तक बर्बाद करते हैं। अलग अलग परिवार, व्यक्ति, स्थान के विभिन्न प्रकार हो सकते हैं परन्तु पानी बर्बादी के अनेक कारणों में से कुछ सामान्य यहां प्रस्तुत हैं :–

1.हाथ धोते समय :

हाथ धोने के लिए खोली गई टूंटी को हाथ धोने के बाद बन्द करते हैं। हाथ गीला करने के बाद साबुन लगाते व हाथ मलते समय टूंटी का पानी नाली में बहता रहता है जिसका कोई उपयोग नहीं होता। वह बर्बाद हो जाता है अर्थात हाथ गीला करके टूंटी बन्द कर दें और साबुन लगाने व मलने के बाद ही पुनः टूंटी खोलें। हर गांव शहर में इसी से प्रतिदिन लाखों, करोड़ों लीटर पानी बचने लगेगा।

गर्म पानी की बास बेसिन पर लगी टुंटी से हाथ धोने के लिए कुछ लोग ठंडा पानी बेकार बहाते हैं, ऐसा न करें। गर्म पानी टुंटी में आने से पहले ठंडा पानी किसी मग आदि में निकालें।

2. मुंह धोते या कुल्ला करते समय :

कुछ लोग टुंटी खोल कर मुंह धोने लगते हैं या कुल्ला करने लगते हैं चुल्लु भर कर मुंह पर या मुंह में ड़ालते हैं। टुंटी चलती रहती हैं। ऐसा वे कई बार करते हैं। प्रयोग में जितना पानी लगता हैं उससे कई गुणा नाली में बह जाता हैं। एक हाथ में पानी भरे और दूसरे से टुंटी बन्द करें और टुंटी खोलें। इसी कम्र को दोहरायें पानी बेकार नाली में नहीं बहेगा या मग में पानी लेकर काम में लें।

3. मंजन–पेस्ट करते समय :

दंत मंजन–पेस्ट करते समय ब्रुश गीला करने के लिए टूंटी खोलते हैं जो कुल्ला करने बाद ही बन्द करते हैं और इस मध्य पानी व्यर्थ बहता रहता है। प्रतिदिन हम इस प्रकार बहुत पानी बर्बाद करते हैं। ब्रुश गीला करने के बाद टूंटी बन्द कर दें। कुल्ला करते हुए भी एक हाथ

टुंटी पर रखें और पानी लेने के बाद बन्द कर दें। पुनः पानी के लिए फिर खोलें और बन्द करें।

4. शेव करते समय :

कुछ सज्जन पुरूष शेव करते समय ब्रुश भिगोकर टूंटी बन्द करने में कष्ट मानते हैं और शेव करने के बाद ब्रुश आदि धोकर ही टूंटी बन्द करते हैं यानी प्रतिदिन 8–10 मिनट या अधिक टूंटी को बेकार चलाए रखते हैं। ब्रुश भिगो कर टुंटी बन्द कर दें। मंजन–पेस्ट व शेव करते समय हमेशा मग में पानी लेकर प्रयोग करें, इसी से प्रतिदिन लाखों लीटर पानी बचने लगेगा।

5. स्नान करते समय :

स्नानघर में बाल्टी टूंटी में खोलकर नहाने लगते हैं और साबुन लगाते व शरीर मलते समय बाल्टी भरने पर पानी नाली में बहता रहता है और हम टूंटी बन्द नहीं करते। नहाने में केवल एक–दो बाल्टी ही काम लेते हैं परन्तु नाली में 5–10 बाल्टी पानी व्यर्थ चला जाता है। थोड़ा सा ध्यान रखकर बहुत पानी बर्बाद होने से बचाया जा सकता है। टूंटी के नीचे बैठकर कभी न नहायें ।

फव्वारा से नहाने में भी पानी बहुत बर्बाद होता है। कृपया ध्यान रखें।

एक बार से अधिक न नहायें।

बाल्टी व मग का साइज छोटा रखें।

6. बर्तन साफ करते समय :

सिंक में बर्तन साफ करते समय खोली गई टूंटी अन्त तक चलती रहती है जबकि बर्तनों पर साबुन/पाउडर लगाते समय पानी की आवश्यकता नहीं होती। टब में बर्तन साफ करते हुए भी टूंटी निरन्तर व बिना आवश्यकता नहीं चलानी चाहिए। स्वयं भी ध्यान रखें तथा अपने नौकर व कामवाली को भी पानी का महत्व समझाएं। टूंटी आवश्यकता न होने पर बन्द कर दें।

7.भोजन करते समय :

बर्तन कम प्रयोग करें ताकि सफाई में लगने वाला पानी बच सके। पोंछने से काम चलता हो तो धोना नहीं चाहिए। सुखी सब्जी, अचार, चटनी आदि कटोरी/बाउल की बजाय प्लेट/थाली में ही डालें।

8. कपड़े धोते समय :

कपड़े मशीन में धोने के बाद बाल्टी में खंगालने की बजाय मशीन में सीधे पाईप लगाकर खंगालने से 20–30 बाल्टी पानी अधिक खर्च होता है। कपड़े बाल्टी में ही खंगालें। ऐसी स्वचालित मशीनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए जिनमें बहुत अधिक पानी खर्च होता हो।

कपड़े खंगालने के बाद पानी फर्श साफ करने में काम ले सकते हैं। मशीन में से निकले ऐसे पानी को भी बाल्टी में निकालें और फर्श सफाई या अन्य प्रयोग में लाएं।

कपड़े अधिक समय पहनकर आवश्यकता अनुसार ही धोने चाहिएं। रंगीन कपड़े पहनने वाले तथा एसी में व वातानुकुलित स्थान पर रहने वाले लोगों को इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

9.वाटर बैल/अलार्म लगवायें :

घरों में पानी की टंकी भरने के लिए विद्युत मोटर चलाई जाती है और टंकी भर जाने के बाद पानी बाहर व्यर्थ बहता रहता है और पता ही नहीं चलता कि कितना पानी व्यर्थ बह गया। यदि उस पानी की निकासी सीवर में न हो तो पानी गली बाजार में इक्कठा हो जाता है जो कभी कभी पड़ोसियों से लड़ाई का कारण भी बनता है।

पानी की टंकी भरने के बाद ओवरफ्लो रोकने के लिए टंकी में गुबारा लगाया जाता था परन्तु अब हर घर में मोटर लगी है इसलिए गुबारा नहीं लगाते जिससे पानी की टंकी ओवरफ्लो होने से बहुत पानी बर्बाद होता है। टंकी भरने की जानकारी के लिए एक अलार्म "वाटर बैल" लगवाएं जिसकी कीमत मात्र 100–120 रूपये ही है। टंकी भरने से पूर्व ही वाटर बैल बोलेगी– सावधान! पानी की टंकी भर गई है, कृपया मोटर बन्द कर दें। निश्चिंतता और जल बर्बादी रोकने के लिए वाटर बैल अवश्य लगवाएं । पानी के साथ साथ बिजली भी बचेगी और धन भी।

10. कूलर में पानी :

गर्मी के मौसम में मध्यम वर्गीय परिवारों में कूलर का बड़ा सहारा रहता है। कूलर में पानी भरने के लिए आम तौर पर पाईप लगाकर भूल जाते हैं या हम अन्य कामों में लग जाते हैं और कूलर भर जाने के बाद पानी फर्श पर गिर कर नाली में बहता रहता है। एक बार में ही 20–30 लीटर और कई बार तो सैंकड़ों लीटर पानी बर्बाद हो जाता है। जरा सोचिए इस प्रकार कितना पानी बर्बाद होता है। पानी सप्लाई रोकने के लिए कूलर में गुबारा अवश्य लगायें। ध्यान रखें हर बूंद कीमती है।

11. वाहन धोना :

कार, स्कूटर, साईकिल या अन्य वाहन पाईप लगाकर धोते समय पानी बहता रहता है। दिल्ली सहित कई सरकारों ने पाईप से वाहन धोने पर जुर्माने का प्रावधान कर दिया है। पहले झाड़ पोंछकर फिर कपड़ा गीला करके भी इसे साफ किया जा सकता है। वाहन पाईप लगाकर न धोयें एक बार में सैंकड़ों लीटर पानी बचेगा।

12.छिड़काव न करें :

बहुत लोगों को (विशेषकर गांव कस्बों व छोटे शहरों में) छिड़काव करने की आदत होती है। घर दुकान के आगे पक्की सड़क होने पर भी प्रतिदिन छिड़काव अवश्य करते हैं। वे यह नहीं जानते कि लुक से बनी सड़क पर पानी डालने से सड़क जल्दी टूट जाती है। गर्मी में किया गया छिड़काव चन्द मिनटों में सुख जाता है और पानी बर्बादी के अतिरिक्त उसका कोई लाभ

नहीं होता। कई बार छिड़काव करने वाले भाई कीचड़ कर देते हैं जो असुविधा या दुर्घटना का कारण भी बनता है। अनावश्यक छिड़काव करके पानी बर्बाद न करें।

13. पशु नहलाना :

पशुओं को नहलाने के लिए जोहड़ तालाब का ही प्रयोग करें। यदि घर पर ही पशु नहलाना हो तो पाईप लगाकर नहीं बल्कि बाल्टी में पानी लेकर मग से नहलाएं। पीने के पानी से पशु को नहीं नहलाना चाहिए। सम्भव हो तो पशु को खेत या बगीचे में नहलायें ताकि उस पानी का उपयोग सिंचाई के लिए हो जाये। थोड़ी सी सावधानी से लाखों लीटर पानी हर मास बच जायेगा।

14. फर्श साफ करना :

पाईप लगाकर फर्श धोते समय बहुत पानी बर्बाद होता है। झाड़ू लगाकर पोचे से फर्श साफ करना चाहिए। गर्मी में कई स्थानों पर आन्धी के कारण फर्श पर मिट्टी –रेत इक्कठी हो जाती है उसे भी झाड़ू से साफ करें। यदि फर्श धोना अनिवार्य ही है तो पाईप की बजाए बाल्टी व मग से धोएं इससे पानी की खपत कम होगी।

15. मिट्टी भरी वस्तु साफ करना :

मिट्टी से भरी वस्तु को धोने में पानी बहुत लगता है। उसे पहले सुखे कपड़े या ब्रुरा से झाड़ पोंछ कर फिर गीले कपड़े से साफ करना चाहिए या मग से पानी डालकर धोना चाहिए। पाईप लगा कर नहीं धोना चाहिए।

16. घड़े या कैम्पर का पानी :

पीने के पानी वाले घड़े या कैम्पर को साफ करते समय उसमें जो पानी होता है उसे खुल्ले में या नाली में न डालकर बाल्टी में निकालें और आवश्यकता अनुसार प्रयोग करें। घड़ा आदि धोने में भी अधिक पानी न बहाएं। प्रतिदिन पानी बदलना भी आवश्यक नहीं है। इसलिए कैम्पर का पानी या कैम्पर प्रतिदिन न बदलें।

पानी सप्लाई करने वाले भी शाम को कैम्पर उठाते समय बचा हुआ पानी वहीं गली में ड़ाल देते हैं, ऐसा न करें। वह वह पानी गन्दा नहीं हो गया होता उसे पुनः प्रयोग करें।

17. फ्लश :

फ्लश पानी बर्बादी का बहुत बड़ा कारण है और घर के कुल पानी खर्च का कम से कम 30 प्रतिशत फ्लश में जाता है। इस पानी खर्च को कम करने के लिए सिस्टर्न में दो लिटर की एक प्लास्टिक बोतल या पोलिथीन में लपेट कर एक ईंट रखी जा सकती है जो पानी की खपत को कम कर देगी। सिस्टर्न में लगे गुबारे को यदि कुछ नीचे सैट कर दिया जाए तो भी पानी की खपत कम हो जाएगी और इस प्रकार लाखों लिटर पानी बचाया जा सकता है। नए सिस्टर्न में थोड़े और पूरे पानी के दो बटन होते हैं यानि पेशाब (Urine) के बाद छोटा बटन और शौच (Latrin) के बाद बड़ा बटन दबायें। पूराने वाले सिस्टर्न में बटन दबाकर 3–4 सैकेंड में बटन उपर उठा दें उससे थोड़ा पानी ही पास होगा।

18. एसी सर्विस :

गर्मी बढने के साथ साथ घर, दफ्तर, हस्पताल आदि में लगे ए,सी. की सर्विस का काम जोर शोर से चलता है जिसमें पानी की बहुत खपत होती है। यदि आप थोड़ा सा ध्यान दें और ए. सी. को पानी से धोने से पहले यदि उसे किसी कपड़े या ब्रुश से झड़वा लें तो निश्चित रूप से हजारों लाखों ए सी सर्विस में कम पानी खर्च करके लाखों लीटर पानी बचाया जा सकेगा। एसी सर्विस करने वाले मिस्त्री कृपया विशेष ध्यान रखें। हवा व कम पानी से सफाई की एक छोटी मशीन आती है उसे भी एसी सर्विस करने वाले मिस्त्री अपने पास रख सकते हैं जिससे पानी व श्रम दोनों की बचत होगी।

19. पानी बचेगा बिजली बचेगी :

पानी बचेगा बिजली बचेगी बढ़ता तापमान, सुखे नल तथा बिजली की कमी जनता को जाम व प्रदर्शन के लिए मजबूर करता है। यदि हम पानी को बर्बाद नहीं करेंगे और उसका सदुपयोग करेंगे तो केवल पानी की समस्या ही कम नहीं होगी बल्कि बिजली की कमी भी दूर होगी। पानी को साफ करने तथा हमारे तक पहुंचाने में बिजली की बड़ी मोटरें चलती हैं और घरों में टंकी भरने के लिए भी मोटरें चलाई जाती हैं जिसमें काफी मात्रा में बिजली की खपत होती है। यदि हम पानी बचायेंगे तो मोटरें कम चलेंगी और बिजली बचेगी जिससे हमें अधिक समय तक बिजली मिल पायेगी। पानी बचेगा बिजली बचेगी । बिजली बचेगी धन बचेगा।

20. कृषि में जल प्रयोग :

खेतों या बाग बगीचों में पानी लगाते समय टयूबवैल या समर्सिबल पम्प चला कर छोड़ देते हैं तथा आवश्यकता से कहीं अधिक पानी भर जाता है जिसमें हजारों लीटर पानी एक बार में ही बर्बाद हो जाता है। कई बार इससे फसल को नुकसान भी होता है। पानी लगाते समय आवश्यकता अनुसार ही पम्प चलायें। फव्वारा पद्वति यानी सुक्षम सिंचाई प्रणाली सर्वाधिक उपयोगी व लाभकारी है।

21. तम्बाकु बिल्कुल न उपजायें :

तम्बाकु की खेती बहुत अधिक पानी की खपत वाली है और तम्बाकु से बनने वाले बीड़ी, सिगरेट, गुटका आदि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। दमा व कैंसर का बड़ा कारण हैं इनका सेवन। सरकार चिकित्सा व प्रचार पर करोंड़ो अरबों रूपये खर्च करती है।

इसी प्रकार गन्ने की खेती के लिए भी बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है। गन्ने से बनी चीनी मोटापे व अन्य बिमारियों को निमन्त्रण देती है। सरकार को इन दोनों फसलों पर नियन्त्रण करना चाहिए जिससे बिमारियों से छुटकारा मिलेगा तथा हस्पतालों में होने वाला खर्च घटेगा और पानी की बड़ी मात्रा में बचत होगी। ऐसी खेती करने वाले कृषक तिलहन व दलहन की खेती करके अधिक लाभ कमा सकते हैं।

22. धान की खेती :

धान की खेती भी **अधिक पानी की खपत वाली है।** टीलडा राईसलैंड प्रा0 लि0 The Tilda Riceland P.Ltd. गुडगांव की कृषि प्रोत्साहन विंग The Farmer Advisory Cell (FAEC) ने विश्व बैंक की सहायता से कुरूक्षेत्र से 13 कि0मी0 जिरबारी गांव में बासमती जल संरक्षण प्राजैक्ट आरम्भ किया है। बासमती की फसल मुख्यतः हरियाणा में होने के कारण भूजल स्तर अधिक गिर रहा है इसलिए जल संरक्षण अति महत्वपूर्ण व आवश्यक है। तकनीकी जानकारी व सिस्टम को सम्बन्धित कृषक, विशेषकर जहां धान की खेती होती है, समझकर इसको अपने क्षेत्र में भी लगवाएं। यह सरकारी योजना है। भविष्य को सुरक्षित करने के लिए इसे आरम्भ कराने के लिए प्रयास करें ।

मशीन द्वारा धान की सीधी बिजाई कारगर है और इससे न केवल पानी की बचत होती है बल्कि कम मेहनत, कम खर्च व कम समय में अच्छी फसल होती है। कृषि विभाग इसमें मार्गदर्शन व सहयोग कर रहा है और इसकी प्लांटिंग के लिए मशीन विभाग की ओर से उपलब्ध कराई जा रही है। इससे फसल की क्वालिटी भी अच्छी रहेगी यानि आम के आम और गुठलियों के दाम वाला लाभ मिलेगा। धान की सीधी बिजाई ही करें तथा जल, समय व धन की बचत करते हुए अधिक फसल प्राप्त करें।

गन्ना भी कम करें– गन्ना की फसल को भी पानी की बडी मात्रा चाहिए जबकि उससे बनने वाली सफेद चीनी स्वास्थय के लिए हानिकारक है। गन्ना उत्पादकों की समस्याएं भी बहुत अधिक रहती हैं। सरकार गन्ना उत्पादन को हतोत्साहित करके जिलहन–दलहन की ओर प्रोत्साहित करें

23. मांसाहार छोड़ें :

शाकाहारी बनें। मांस साफ करने के लिए अरबों लीटर पानी मासिक खर्च होता है। अधिक मांस प्राप्त करने के लिए गाय व सुअर को अधिक अनाज खिलाया जाता है जिसके कारण बहुत बड़ी मात्रा में अनाज भी बर्बाद किया जा रहा है। भारत में हजारों कत्लगाहों में इसी प्रकार वर्ष भर में अरबों लीटर पानी बर्बाद किया जाता है। मांसाहार छोड.कर शाकाहार अपनाएं। मासाहार में मरता प्राणी। बहुत खर्च होता है पानी। जीव बचेगा, अन्न बचेगा, जल बचेगा, जीवन बचेगा।

24. पानी पीते समय :

कुछ लोग एक दो घुंट, आधा गिलास पानी पीकर छोड़ देते हैं। जो पानी छोड़ दिया वह बर्बाद हो गया। यदि आर ओ का पानी है तो आपने जितना छोड़ा उसका कई गुणा बर्बादी के उत्तरदायी हैं।

200 मि0ली0 के गिलास या बोतल का प्रयोग बिल्कुल न करें। पानी बर्बादी के साथ–साथ प्लास्टिक प्रदूषण का भी बड़ा कारण है। इस पानी से हाथ बिल्कुल न धोंयें। पीने के लिए आधा गिलास पानी लें। आवश्यकता अनुसार और ले लें। मेहमान को भी ऐसे ही दें।

25. होली के रंग :

निश्चित रूप से होली रंगों का त्योहार है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम कैमिकल युक्त व गन्दे रंगों का प्रयोग करके वातावरण को दूषित करें तथा चर्म व नेत्र रोगों को

निमन्त्रण दें। समय के साथ साथ मान्यताएं व आवश्यकताएं भी बदलती रहती हैं। रंगों को लगाने में तो थोड़ा पानी प्रयोग होता हैं परन्तु रंग उतारने में बहुत पानी खर्च होता हैं जिसे हम तिलक होली यानी केवल गुलाल का तिलक मात्र लगाकर अपने प्यार व सम्मान का प्रदर्शन कर सकते हैं। इस प्रकार हर शहर गांव में लाखों लीटर पानी बर्बादी से बचाया जा सकता है और हम सब पानी की कमी की राष्ट्रीय समस्या को कम करने में सहयोगी हो सकते हैं। कृपया इसे अन्यथा न लें और राष्ट्रीय परिवेश में देखें।

26. आर ओ से निकला वेस्ट वाटर :

क. .घरों में : वेस्ट वाटर पाईप को किसी बाल्टी में छोड़ कर एकत्रित पानी को सफाई में काम लें। एक 10–20 लीटर की टंकी बास बेसिन के उपर फीट करके वेस्ट पाईप उससे जोड़ दें। टंकी को टुंटी लगा दें। हाथ धोने में काम आ सकेगा।

ख.व्यापारिक संस्थानों/कार्यालयों में : एक 100–200 लीटर की टंकी बास बेसिन के उपर फीट करके वेस्ट पाईप उससे जोड़ दें। टंकी को टुंटी लगा दें। हाथ धोने में काम आ सकेगा।

ग.हस्पताल, बड़े संस्थान, रेलवे स्टेशन, बस अड्डा आदिः :

एक 100–200 लीटर की टंकी फीट करके वेस्ट पाईप उससे जोड़ दें। टंकी का पाईप द्वारा टुंटी लगा कर बास बेसिन पर फिट कर दें। हाथ धोने व सफाई में काम आ सकेगा। ऐसा सम्भव न हो तो आर ओ वेस्ट वाटर पाईप को एक बड़े साईज की बाल्टी में डाल दें। इस पानी को सफाई व अन्य सम्भव कार्यो में प्रयुक्त करें। अनेक लोग ऐसा करने लगे हैं आप भी करें ।

घ : मिट्टी का दीपक– पूजा घर में मिट्टी का दीप जलाएं शुद्धता के साथ साथ प्रतिदिन साफ करने में खर्च होने वाला पानी बचेगा।

27. विभागीय लापरवाही :

सरकारी विभाग की लापरवाही भी पानी की कमी के लिए उत्तरदायी है। दिल्ली हो या मुम्बई, हरियाणा हो या राजस्थान पाईप लाईनों में अनेक स्थानों पर लीकेज रहता है परन्तु नगर परिषद् या निगम अधिकारी इस विषय में अचेत रहते हैं जबकि पानी की सप्लाई की मात्रा घटाने में हमेशा तत्पर रहते हैं। ऐसे लापरवाह अधिकारियों का उत्तरदायित्व निश्चित होने पर भी सुधार की कुछ सम्भावना बढ़ेगी।

28. जलाभिषेक :

श्रावण मास और उसमें शिवरात्रि पर्व पर जल का विशेष महत्व है क्योंकि पूरे मास शिवजी का जलाभिषेक किया जाता है। पानी की कमी को ध्यान में रखते हुए शिवलिंग पर बाल्टियां भर भर कर नहीं बल्कि केवल लोटा भर जल ही चढ़ाएं। महादेव मनोभाव व श्रद्धा से ही प्रसन्न होते हैं, जल की अधिक मात्रा से नहीं। कविता की इन पंक्तियों को ध्यान में रखकर पूजा करें–

''पूजा और पूजापा प्रभुवर इसी पूजारिन को समझें।
दान दक्षिणा और न्यौछावर इसी भिखारिन को समझें''।

29. शिव आराधना व वरुणदेव :

शिव आराधना करते हुए इन्द्रदेव तथा वरूणदेव का भी सम्मान करें। वरुणदेव जल अधिपति कहलाते हैं। पानी बर्बाद करके उनका अनादर न करें। मन्दिरों के प्रबन्धकों को वाटर हारवैस्टिंग या रिचार्जर लगवाने चाहिएं ताकि भक्तों द्वारा शिवलिंग पर चढाया गया जल नालियों में ना बहकर सीधा जमीन में चला जाये और भूजल स्तर सुधारने में सहायक हो।

पूर्व व्यवस्था पर नजर डालें तो लगभग सभी शिवालय तालाब के किनारे स्थित हैं। या यूं कहें कि शिवालय तालाब के पास बना है और शिव पर अर्पित दुध व जल उस तालाब में चला जाता है। इससे जल संरक्षण होता है व जल का अन्य उपयोग भी हो सकता है। दुध के कारण तालाब मे काई नहीं जमती और पानी गन्दा नही होता। अब स्थिति बदल गई है। शिवालयों का पानी व दुध सीवर में जाता है जिससे जल अधिपति वरूणदेव का निरादर होता है और दुध भी व्यर्थ बह जाता है। शिवालय के साथ वाटर हारवैस्टिंग अवश्य बनवाएं ताकि पानी को संचित किया जा सके।

30. पौधारोपण :

वर्षा के लिए जंगल का बहुत महत्व है। धरती पर एक शताब्दी पूर्व 40 प्रतिशत से अधिक जंगल था जो वर्तमान में लगभग 10 प्रतिशत रह गया है। हर वर्ष एक पौधा अवश्य लगाएं और वर्षा जल का मार्ग प्रशस्त बनाएं।

31. समर्थ व सक्षम नागरिक :

आम आदमी की अपेक्षा समर्थ और सक्षम लोगों के घरों में अधिक पानी बर्बाद होता है। यदि ऐसे लोग, बड़े अधिकारी व जन प्रतिनिधि देश की ज्वलंत समस्या पानी की कमी को दूर न कर सकें तो कम से कम उसे बढ़ाने का कारण तो न बनें। अपने घर में बर्बाद होने वाले पानी की ओर ध्यान दें।

32. वाटर मीटर :

हरियाणा सरकार ने शत प्रतिशत पेयजल कनैक्शन लगवाने वाली पंचायतों को 50 हजार रूपये पुरस्कार देने की घोषणा की है। इससे पानी की बर्बादी रूकेगी और नल अकारण नहीं चलेंगे। शीध्र वाटर मीटर युक्त पानी कनेक्शन लगवाएं। सभी सरकारें ऐसा प्रोत्साहन दें तो जल बर्बादी घटेगी।

33. सीवरेज का पानी–पीना :

सेवरेज के पानी को पीने योग्य बनाने वाली मशीनः लंदन नैनोप्रौद्योगिकी विशेषज्ञ मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के साराह हेग का कहना है कि एक नई मशीन बनाई गई है जो कि शौचालय

के बेकार पानी को पीने योग्य बना सकती है। माइक्रोसाफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स की ओर से वित पोषित यह आविश्कार विकासशील देशों में लाखों लोगों का जीवन बदल सकता है। अनुसंधानकर्ताओं की योजना इस मशीन के नमूने को वर्ष 2013 तक प्रदर्शित करने की थी परन्तु सम्भव न हो सका। हालांकि मशीन से साफ होने वाला पानी मिनरल वाटर जैसा नहीं हो सकता लेकिन अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि परिणाम उन क्षेत्रों के लिए काफी मायने रखेंगे जहां स्वच्छ जल की भारी कमी है।

34. **ग्राउंड टैंक बनवाएं जल बचाएं :**

लोग अगर अपने घर में जल संगहण के लिए भूमिगत टैंक बनाएं तो उससे न केवल पानी की बचत होगी बल्कि बिजली भी बचाई जा सकेगी क्योंकि भूमिगत टैंक में पानी बिना बिजली की मोटर के ही भर जाता है। भूमिगत टैंक से पानी को कहीं भी प्रयोग किया जा सकता है। पानी के टैंक में लोगों को बाल कॉक यानि गुब्बारा भी लगवाना चाहिए ताकि भरने के बाद टैंक में पानी अपने आप बंद हो जाए। टैंक में यदि गुब्बारा न लगवाया जाए तो पानी की सप्लाई निरन्तर टैंक में होती रहती है और टैंक भरने के बाद हजारों लीटर पानी बाहर बिखरकर बर्बाद हो जाता है। जब वाटर सप्लाई आती है तो लोग मोटर चलाकर टंकी में पानी भरते हैं और गुब्बारा न लगा होने के कारण टंकी भर जाने पर पानी व्यर्थ ही बाहर गिरता रहता है जिससे बिजली भी जलती है और पानी का मीटर भी चलता रहता है। इसलिए भूमिगत टैंक बनवायें। टंकी में गुब्बारा न लगवाएं तो वाटर बैल अवश्य लगवाएं जो टंकी भरने पर 'पानी की टंकी भर गई है। कृपया मोटर बन्द कर दें' बोल बोल कर आपको सचेत करेगी ।

35. होस्टल/धर्मशाला–बड़े संस्थान –

जहां प्रतिदिन सैंकड़ों लोग स्नान करते हैं। स्नानघरों का हजारों लीटर पानी सीवर में चला जाता है यदि इस पानी को अलग टैंक में स्टोर करके टायलैट से जोड़ दिया जाये तो टायलैट में प्रयोग होने वाला हजारों लीटर शुद्ध जल बच जायेगा। शिक्षण संस्थानों के हास्टल, बड़ी धर्मशालाएं या ऐसे ही अन्य संस्थान इसका पालन कर सकते हैं।